में दिन-रात नहीं डूबे रहते थे, न कालिदास, भवभूति, श्रीहर्ष आदि कवियों के संप्रदाय के अनुसार वे लोग कामिनी के विभ्रम-विलास और लावण्यलीला-लहरी में गोते मार-मार प्रमत्त हुए थे।

(ग) जात ले जात, टके सेर जात। एक टका दो हम अभी अपनी जात बेचते हैं। टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जाए और धोबी को ब्राह्मण कर दे, टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था कर दें। टके के वास्ते झूठ को सच करें। टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिन्दू से क्रिस्तान। टके के वास्ते धर्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचैं, टके के वास्ते झूठी गवाही दें। टके के वास्ते पाप को पुण्य मानैं, टके के वास्ते नीच को भी पितामह बनावैं। वेद धर्म्म कुल मरजादा सच्चाई बड़ाई सब टके सेर। लुटाय दिया अनमोल माल, ले टके सेर।

6. निम्नलिखित में से **किसी एक** पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(क) रेखाचित्र

(ख) व्यंग्य

(ग) कहानी

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 597 **A**

Unique Paper Code : 52051407_OC

Name of the Paper : HINDI 'A'

Name of the Course : **B.Com (Prog)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. उपन्यास के स्वरूप पर प्रकाश डालिए (12)

अथवा

निबंध के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

2. 'पुरस्कार' कहानी में मधुलिका का चरित्र-चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

''मैं हार गई' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

3. ''नाखून क्यों बढ़ते हैं'' निबंध की प्रासंगिकता पन अपने विचार लिखिए। (12)

अथवा

''उत्साह'' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए।

4. ''भोलाराम का जीव'' पाठ में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

''अंधेर नगरी'' की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित में से **किन्ही दो** की सप्रसंग व्याख्या लिखिए। (2×10=20)

(क) ऊपर खिड़कियों में चेहमेगोइयाँ तेज हो गई कि अब दोनों आमने-सामने आ गए हैं, तो बात जरूर खुलेगी .. फिर हो सकता है दोनों में गाली - गलौच भी हो। .. अब रक्खा गनी को हाथ नहीं लगा सकता। अब वे दिन नहीं रहे ! .. बड़ा मलबे का मालिक बनता था ! .. असल में मलबा न इसका है, न गनी का। मलबा तो सरकार की मलकियत है ! मरदूद किसी को वहाँ गाय का खूँटा तक नहीं लगाने देता ! .. मनोरी भी डरपोक है। इसने गनी को बता क्यों नहीं दिया कि रक्खे ने ही चिराग और उसके बीवी - बच्चों को मारा है! .. रक्खा, आदमी नहीं साँड है!

(ख) हमारे पुराने आर्यो का साहित्य वेद है। उस समय आर्यो की शैशवावस्था थी, बालकों के समान जिनका भाव, भोलापन, उदार भाव, निष्कपट व्यवहार, वेद के साहित्य को एक विलक्षण तथा पवित्र माधुर्य प्रदान करते हैं। वेद जिन महापुरुषों के हृदय का विकास था वे लोग मन और याज्ञवल्क्य के समान समाज के आभ्यांतरिक भेद, वर्ण - विवेक आदि के झगड़ों में पड़ समाज की उन्नति या अवनति की तरह-तरह की चिंता में नहीं पड़े थे, कणाद या कपिल के समान आने- अपने शास्त्र के मूलभूत बीज सूत्रों को आगे कर प्राकृतिक पदार्थो के तत्त्व की छान